शिव का धनुष

विद्यालय में आ गए इंस्पेक्टर-स्कूल
छठी क्लास में पढ़ रहा, विद्यार्थी हरफूल
विद्यार्थी हरफूल, प्रश्न उससे कर बैठे
किसने तोड़ा शिव का धनुष बताओ बेटे !
छात्र सिटपिटा गया बिचारा, धीरज छोड़ा
हाथ जोड़कर बोला, सर ! मैंने ना तोड़ा

यह उत्तर सुन आ गया, सर के सर को ताव
फौरन बुलवाए गए, हेडमास्टर साब
हेडमास्टर साब, पढ़ाते हो क्या इनको
किसने तोड़ा धनुष नहीं मालूम है जिनको
हेडमास्टर भन्नाया- फिर तोड़ा किसने ?
झूठ बोलता है, जरूर तोड़ा है इसने

इंस्पेक्टर अब क्या कहे, मन ही मन मुसकात
ऑफिस में आकर हुई मैनेजर से बात
मैनेजर से बात, छात्र में जितनी भी है
उससे दुगुनी बुद्धि हेडमास्टर जी की है
मैनेजर बोला, जी हम चंदा कर लेंगे
नया धनुष उससे भी अच्छा बनवा देंगे

शिक्षा-मंत्री तक गए जब उनके जज़बात
माननीय गद्‌गद् हुए, बहुत खुशी की बात
बहुत खुशी की बात, धन्य हैं ऐसे बच्चे
अध्यापक, मैनेजर भी हैं कितने सच्चे
कह दो उनसे चंदा कुछ ज़्यादा कर लेना
जो बैलेंस बचे वह हमको भिजवा देना ।

सच्चा विद्यार्थी

अधिकारी माने नहीं, अगर आपकी माँग
हॉकी लेकर तोड़ दो, अनुशासन की टाँग
अनुशासन की टाँग, वही बन सकता नेता
जो सभ्यता, शिष्टता का चूरन कर देता
फ़िल्म दिखाए मुफ़्त, उसी को मित्र बनाओ
कॉपी पर प्रिय श्रीदेवी के चित्र बनाओ

पूज्य पिता की नाक में, डाले रहो नकेल
' रेगुलर ' होते रहो, तीन साल कर फेल
तीन साल कर फेल, भाग्य चमकाता ज़ीरो
बहुत शीघ्र बन जाओगे, कॉलेज के हीरो
कहँ ' काका ' कविराय, वही सच्चा विद्यार्थी
जो निकाल कर दिखला दे, विद्या की अर्थी ।

काका और मच्छर

काका वेटिंग रूम में, फँसे देहरादून
नींद न आई रात-भर, मच्छर चूसें खून
मच्छर चूसें खून, देह घायल कर डाली
हमें उड़ा ले जाने की योजना बना ली
किंतु बच गए कैसे, यह बतलाएँ तुमको ?
नीचे खटमल जी ने पकड़ रखा था हमको !

हुई विकट रस्साकशी, थके नहीं रणधीर
ऊपर मच्छर खींचते, नीचे खटमल वीर
नीचे खटमल वीर, जान संकट में आई
चिल्लाए हम जय-जय-जय हनुमान गुसाईं
पंजाबी सरदार एक, बोला चिल्ला के
" तुस्सी भजन करना है तो कर बाहर जा के "

सुबह उठे सरदार जी, पूछी हमने बात
कैसे वेटिंग रूम में, तुमने काटी रात ?
तुमने काटी रात " अस्सी बिल्कुल नहीं डरता
ठर्रा पीकर ठर्र ठर्र खर्राटे भरता
मच्छर चूसें खून, नशा उनको आ जाता
सो जाते हैं मच्छर, तब तक हम जग जाता !"

काका हाथरसी